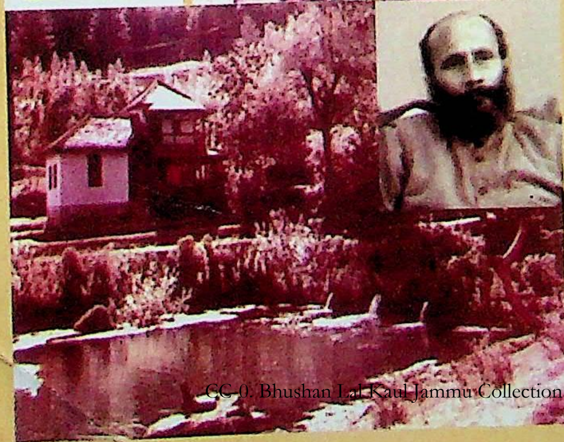




ॐ

श्री नागदण्डी चालीसा

लेखक
चमन लाल राज़दान

भाग–1

नागदण्डी महात्म्य (संक्षिप्त)

कश्मीर आध्यात्मिक दर्शन का महासमुद्र रहा है और इसमें जहां विद्वान और साधु–सन्तों का योगदान रहा है वहां श्री रामकृष्ण महासम्मेलन आश्रम, नागदण्डी (अच्छाबल) कश्मीर भी एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा केन्द्र है। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक के आरम्भ में कई ज्ञानी युवा सन्यासी कश्मीर घाटी में पधारे

जिनमें मुख्यतः रामकृष्ण परमहंस के अनुयायी शामिल थे। उन महानुभावों ने कश्मीर के स्थानीय बुद्धिजीवियों के साथ विचार-विमर्श किया और श्रीमद्भग्वत्गीता, वेदान्त इत्यादि के मूल ज्ञान के बारे में उनकी बोधगम्यता देखकर चकित रह गये। कश्मीर के बुद्धिजीवियों की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर उतना ही उच्च था जितना भारतीय दर्शन का विश्व-स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले स्वामी विवेकानन्द जी का।

स्वामी विवेकानन्द जी के शब्दों में पूरे विश्व में कश्मीर एक ऐसा स्वर्ग है जहां की शिलायें, नदियाँ, पेड़-पौधे, नर-नारी, जानवर तथा पक्षी अपनी उत्कृष्टता में एक दूसरे से आगे हैं। उन्होंने सिस्टर निवेदिता को भी लिखा था कि 'मेरा हृदय व्यथित हो रहा है कि आज तक मैं यहाँ (कश्मीर) नहीं आया था। मैं कश्मीर का वर्णन नहीं कर सकता केवल इतना कहना काफ़ी है कि मुझे किसी देश-विदेश को छोड़ने में ऐसी पीड़ा की अनुभूति नहीं हुई है जैसी कि इस स्वर्ग रूपी धरा को

छोड़ने में हो रही है।'

स्वामी जी को कश्मीर में आश्रम-स्थापना की प्रबल इच्छा थी। उनके मन में यह इच्छा आखिर क्यों जागृत हुई यह हम जैसे साधारण व्यक्ति नहीं समझ सकते। चूंकि स्वामी जी दोबारा घाटी नहीं जा पाये, यह सपना उनके जीवनकाल में पूरा नहीं हो सका। परन्तु क्षीर भवानी में माँ काली की प्रेरणा से जागृत इस इच्छा रूपी दैवी योजना को साकार रूप देने के लिए स्वामी अशोकानन्द जी महाराज अचानक उदित

हुए। ब्रह्मलीन स्वामी अशोकानन्द जी महाराज माँ शारदा से दीक्षित स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज (पूर्व बंगाल) के शिष्य थे। वे रामकृष्ण मठ के आदर्शों के प्रति सत्यनिष्ठ थे तथा इनके लिए वह सदा कार्यरत रहते थे। उनका मुख्य उद्देश्य मानव मूल्यों तथा रामकृष्ण परम्हंस, माँ शारदा और विवेकानन्द जी के संदेश का प्रचार-प्रसार करना था।

स्वामी अशोकानन्द जी महाराज का जन्म पूर्व बंगाल में 10 फरवरी 1911 को मुखर्जी परिवार में

हुआ था। उनका वास्तविक नाम दीनबंधु था। वे बाल्यकाल से ही सांसारिक जीवन के प्रति उदासीन किन्तु प्रखर बुद्धि के स्वामी थे। आपने केवल आठ वर्ष की आयु से घर-द्वार छोड़कर स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज के आश्रम का आश्रय लिया। वहाँ आपने इष्ट के प्रति पूर्ण समर्पण करके कठोर आध्यात्मिक अनुशासन में कठिन साधना की। वहीं पर आश्रम में आपने संन्यास धारण किया तथा स्वामी अशोकानन्द के नाम से जाने लगे। तत्पश्चात् आप उत्तरकाशी गये

और आपने हिमालय की यात्रा के दौरान उच्च स्तर का शारीरिक एवं आध्यात्मिक ओज प्राप्त किया। आप को गीता आश्रम के निकट (स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पास) एक कुटिया दी गई जहाँ आपकी अन्तर्दृष्टि और भी व्यापक हुई और आप निरन्तर रामकृष्ण परम्हंस, माँ शारदा और माँ काली की स्वतः उपस्थिति से सदैव अभिभूत रहे। इसके बाद गुरु महाराज स्वामी सच्चिदानन्द जी ने आपको वस्त्र त्याग कर हिम, वर्षा, धूप इत्यादि को बिना किसी बाह्य सहारे

योगिक शक्ति के सहन करने का एवं केवल व्यवहार से न कि संवाद से रामकृष्ण परम्हंस, शारदा माँ, स्वामी विवेकानन्द के आदर्श तथा अनमोल संदेश को कश्मीर जाकर स्थापित करने का आदेश दिया। आपने जगज्जननी माँ के स्वरूप पर विशेष महत्त्व दिया जिसके परिणामस्वरूप स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की इच्छा फलीभूत हुई और श्रीरामकृष्ण महासम्मेलन सिद्ध–पीठ आश्रम, अनंतनाग जनपद में नागदण्डी (अच्छाबल) कश्मीर की स्थापना हुई। वर्तमान में भी

यह आतंकवाद के भयावने वातावरण में बिना किसी भेदभाव के घाटी के जन समुदाय की आध्यात्मिक एवं अन्य लोक कल्याणकारी सेवा कार्यों में सक्रिय है। नागदण्डी के महत्त्व को समझते हुए स्वामी विवेकानन्द शिला स्मारक, कन्याकुमारी ने इस आश्रम को मान्यता प्रदान की तथा इसकी प्रगति में सक्रिय योगदान दे रहा है। अब यह स्थल विवेकानन्द केन्द्र, नागदण्डी के नाम से जाना जाता है।

हाल ही में मेरी भेंट आश्रम के कई भक्तजनों के

साथ जम्मू में हुई। उनके निमंत्रण पर मुझे घने जंगलों के बीच इस रमणीय आश्रम में कुछ दिन रहने एवं महायज्ञ में सम्मिलित होने का सुअवसर मिला। आश्रम के प्रबन्धक श्री विवेकराय जी, जोकि बहुत ही सम्मानित व्यक्ति हैं, के अतिरिक्त बहुत सज्जनों के साथ भेंट हुई जिससे मैं बहुत ही प्रभावित हुआ विशेषकर जब सभी वर्गों के लोग आश्रम के हर कार्य में व्यस्त पाये गये। विवेकजी ने मुझे भी हर एक सुविधा प्रदान की जैसा वे प्रत्येक आगन्तुक को प्रदान करते हैं। आश्रम प्रवास

के दौरान इस प्रेरणादायी केन्द्र के महत्त्व से अभिभूत होकर मेरी लेखनी सक्रिय हो उठी और 'नागदण्डी चालीसा' का सृजन हुआ जिसे साधकों एवं भक्तजनों विशेषकर श्री मनमोहन धर जी की इच्छा का सम्मान करते हुए, प्रेरणादायी प्रो० चमनलाल सप्रू जी तथा सुश्री संतोष ठठू जी के सहयोग से ससम्मान आपको भेंट कर रहा हूँ। यहां यह कहना उचित होगा कि नागदण्डी के महात्म्य के बारे में भी यदि कुछ जाना जाये तो और भी अच्छा रहेगा। इसी दृष्टिकोण से

नागदण्डी चालीसा के साथ नागदण्डी महात्म्य (संक्षिप्त) भी रखा गया है। आशा है भक्तजन मेरे इस छोटे से प्रयास को सराहते हुए लाभान्वित होंगे।

धन्यवाद।

चमन लाल राज़दान

4 मार्च **2005**
(होराष्टमी)

ॐ

भाग - 2

श्री नागदण्डी चालीसा

दोहा

राम विवेक और शारदा,
करते पूर्ण काम्।
विघ्न-हरण हैं सर्वदा,
क्रिया करो निष्काम् ।।

सिद्ध-पीठ आश्रम नागदण्डी में
शीश नमन को आया मैं ।।१।।
जयजय ठाकुर सुन्दर शुभ नाम्
शत-शत मेरा विनय प्रणाम् ।।२।।
निकला सूरज और डूबा पश्चिम्
अन्त स्वार्थ जन-शासन उत्तम् ।।३।।
प्रभु रामकृष्ण का महासम्मेलन
'श्री दीनबंधु' आश्रम स्थापन ।।४।।

ठाकुर बैठा गहन जंगल में
अद्भुत लीला अज्ञानी मैं ।।५।।
शीश मुकुट है कश्मीर -तिलक
कन्या कुमारी ऊँ शिला स्मारक ।।६।।
श्री अशोकानन्द जी महाराज
वे करते सबका पूर्ण काज ।।७।।
तीन-चीड़ आसन नमन है मेरा
घोर तपस्या अशोक वाटिका ।।८।।

शीतकाल का शीतल मन
किया लोभ का शान्त शमन ।।९।।
साधना-शक्ति सहज कर दी
पीठ-आश्रम और रक्षा प्राणी ।।१०।।
शिव मूर्ति को भीतर पाया
बैठा हिम पर योग जगाया ।।११।।
शान्त अवस्था नग्न है तन
बाँध के रखा अपना मन ।।१२।।

जीवन अर्पण विवेकानन्द पर
जयजय स्वामी हो तुम अमर ।।१३।।

पादुका तेरी है मार्ग–दर्शक
दीन दुःखी की बनी सहायक ।।१४।।

शीतल सरोवर जल है अमृत
करता सबका मन विस्मित ।।१५।।

अनन्त है जल नागों का
सर्वजन मंगल अमृत झरना ।।१६।।

दीक्षा अपने भक्त जनों को
आनन्दमय तेरा हर सेवक हो ।१७।।
कृपा है तेरी सद्गुरु स्वामी
दीन दयाल हो अन्तरयामी ।।१८।।
सदा-बरत है आश्रम-द्वार
भक्त जनों का आदर सत्कार ।।१९।।
अन्तर न कोई सभी समान
मुक्ति पावत मिलत निर्वाण ।।२०।।

हवन शाला और ठाकुर द्वार
दो माँ दर्शन बारम्बार ।।२१।।
संग है बैठा समाधि में
नत मस्तक सेवक हूँ मैं ।।२२।।
सिद्ध–पीठ आश्रम मिलता ज्ञान
जनसमूह का सदा कल्याण ।।२३।।
गौशाला में सुन्दर दर्शन
नाम पुकारो कर लो पूजन ।।२४।।

भोजनालय में भोजन कर लो
थाली भर दी मन्त्र बोलो ।।२५।।
गुरु पूजन में बैठो संग
ध्यानालय में हो सत्संग ।।२६।।
विघ्न-हरण हैं मंगलकारी
तीनों बैठे हित उपकारी ।।२७।।
खुले दर्शन खुले हैं द्वार
मुक्ति दे दो शुद्ध विचार ।।२८।।

परम्हंस की मातृ-पूजा
काली माँ का शंख गूंजा ।।२९।।
शारदा माँ की अनुकम्पा से
दान भोज सदा विस्तार हुये ।।३०।।
स्वामी! मेरा अन्धकार मिटा दो
झोली फैली ज्ञान से भरलो ।।३१।।
श्री सच्चिदानन्द जी महाराज
करुणा निष्ठा सफल तेरा काज ।।३२।।

साधना तेरी क्रिया है मेरी
चरण हैं कोमल माया तेरी ।।३३।।
वरदान मिले हम पावें भक्ति
चिन्तन होवे पाकर शक्ति ।।३४।।
शिव-शक्ति है मंगलकारी
मंगलमय हो मंगल भूमि ।।३५।।
मानव-सेवा और आश्रम-भाव
कारण यही है मुक्ति प्रभाव ।।३६।।

निर्भय होकर रहना परिसर
विवेक-चिन्तन पावन है अवसर . ।।३७।।
राम कृष्ण कृष्ण ही राम
नागदण्डी का यही है नाम ।।३८।।
पाठ करे जो यह चालीसा
मनवान्छित वह फल पावेगा ।।३९।।
नागदण्डी की यह अमर कथा
मैं दर्शन पाकर अमर हुआ ।।४०।।

दोहा

अहं अज्ञान और अंधकार,
घातक है परिणाम् ।
शुद्ध आचार विचार व्यवहार,
मस्तक नमन प्रणाम् ।।

चमन लाल राज़दान

प्रथम संस्करण	:	(मार्च 2005)
प्रति	:	2000
प्रकाशक	:	शारदा साधना केन्द्र, दिल्ली (फोन 22136144)
मूल्य	:	पाँच रुपये
लेखक	:	चमन लाल राज़दान 107-डी, पॉकेट-बी दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095 फोन : 2213 6144
मुद्रक	:	बी.बी. ग्राफिक्स प्रिंटर फोन : 51707666, 9810011719